



Rahe Khuda Mein Kharch Karne Ke Fazaail (Hindi)

राहे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ाइल

رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَاءِ وَمُوَاسَأَةِ الْفُقَرَاءِ

(पढ़ोमियों की या 'कत' और फ़कीरों की गम सुवारी
के ज़रीए़ कहूत और वधा को टाल देने वाला)

مُسَنِّف : آ'लا हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान عليه السلام

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़् : शैखे त्रीकृत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अच्छार कादिरी रज़वी दामَث بِرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये इन شَاءَ اللّٰهُ مَرْءُوا

اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَافْشِرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाजिल फरमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المستظر ف ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अब्वल आखिर एक एक बार दुरुद शरीफ पढ़ लीजिये ।

तुलिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मणिरत



13 शब्बालुल मुर्करम 1428 हि.

कियामत के रोज़ हसरत

फरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى عَلِيهِ وَالْمَوْلَى سَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत कियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शब्द को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया) ।

(تاريخ دمشق لابن عساكرة ج ١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जे हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ फरमाइये ।

مجالیسے تراجم (دا'ватے اسلامی)

يَهُوَ الرِّسَالَةُ الْمُبَشِّرَةُ بِدَعْوَةِ الْجِيَرَانِ وَمُؤَاسَةِ الْفُقَرَاءِ

آلہا حجّر رتِ ایمماں احمد رجّا خان نے عربی میں اسی کا تذکرہ دیا ہے۔ اسی کا مطلب یہ ہے کہ جبکہ اسلامیت کے اعلیٰ ائمماں اور علماء کو اپنے اعلیٰ درجے کے لئے اپنے اعلیٰ ناموں پر احترام کیا جاتا ہے، اسی کے مقابلے میں ایسا شخص کو اپنے اعلیٰ نام پر احترام کیا جائے تو اس کے لئے اعلیٰ درجے کا اعلیٰ نام مل جائے گا۔

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल खत् में तरतीब देते हुए दर्जे जैल
मुआ-मलात को पेशे नजर रखने की कोशिश की गई है :

(1) करीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाजेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख्खूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये “हुरूफ़ की पहचान” नामी चार्ट मुला-हज़ा फरमाइये।

(2) जहां जहां तलफ्फुज के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ्फुज की दुरुस्त अदाएंगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन हृफ़ के नीचे खोड़ा (,) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां **ع** साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन **ع** (دا'वत, इस्ति'माल) वगैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फरमा कर सवाब कमाइये ।

હુર્રફ કી પહોંચ

ફ = ફ	પ = ફ	ભ = ફ	બ = ફ	અ = ફ
સ = સ	ટ = સ	ટ = સ	થ = સ	ત = સ
હ = હ	છ = હ	ચ = હ	જ = હ	જ = હ
ઠ = ઠ	ડ = ઠ	ધ = ઠ	દ = ઠ	ખ = ઠ
જ = જ	ઢ = જ	ડ = જ	ર = જ	જ = જ
જ = જ	સ = જ	શ = જ	સ = જ	જ = જ
ફ = ફ	ગ = ફ	અ = ફ	જ = ફ	ત = ફ
ઘ = ઘ	ગ = ઘ	ખ = ઘ	ક = ઘ	ક = ઘ
હ = હ	વ = હ	ન = હ	મ = હ	લ = હ
ઈ = ઈ	ઇ = ઈ	ऐ = ઈ	ए = ઈ	ય = ઈ

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઇસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,
તીન દરવાજા, અહુમદાબાદ-1, ગુજરાત

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तारीखः 21 जी का'दा 1425 हि.

हवाला : 95

तस्दीक नामा

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين

وعلى آله وأصحابه أجمعين

तस्दीक की जाती है कि किताब

رَأْدُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدُعْوَةِ الْجِيَرَانِ وَمُؤَاسَةِ الْفُقَرَاءِ

(मत्भूआ मक-त-बतुल मदीना) की तस्हील व तख्तीज बनाम “राहे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ाइल” पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़काइद, कुफ्रिय्या इबारात, अख्लाकिय्यात, फ़िक्ही मसाइल और अ़-रबी इबारात वगैरा के हवाले से मक़दूर भर मुला-हज़ा कर लिया है। अलबत्ता कम्पोजिंग या किताबत की गृ-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस

तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

03-01-2005

राहे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ाइल

رَادُّ الْقُحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُؤَاسَةِ الْفُقَرَاءِ

(पड़ोसियों की दा'वत और फ़कीरों की ग़म ख़ारी के ज़रीए
क़हूत और वबा को टाल देने वाला)

मुसनिफ़

आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضِیَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْہُ

पेशकश

अल मदीनतुल इल्मय्या

जुम्ला हुकूक ब हक्के नाशिर महफूज़ हैं

नाम किताब : رَأْدُ التَّحْكِيطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيَرَانِ وَمُؤَاسَةِ الْفُقَرَاءِ

मुसनिफ़ : آ'लا هज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضي الله تعالى عنه

हाशिया : राहे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ाइल

मुहश्शी : मौलाना अब्दुर्रशीद हुमायूँ अल म-दनी

तस्हीह व नज़रे सानी : मौलाना अब्दुर्ज़ज़ाक अल अ़त्तारी व
मौलाना यूनुस अ़ली अ़त्तारी

सिने तबाअत : मार्च 2018

पेशकश : अल मदीनतुल इल्मय्या

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कुतुबे आ'ला हज़रत और अल मदीनतुल इल्मिया

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةُ

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ وَبِفَضْلِ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

मेरे वलिये ने'मत, मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजह्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअ़त, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ेरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफिज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

बे मिसाल ज़हानत व फ़त्तानत, कमाल द-रजा फ़क़ाहत और क़दीम व जदीद उलूम में कामिल दस्त-रस व महारत रखते थे। आप

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

की तक़्रीबन एक हज़ार कुतुब आप

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

के पचपन से ज़ाइद उलूमो फुनून में तबहहुरे इल्मी पर दाल्ल हैं। आप

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

की जिन क़-लमी काविशों को बैनल अक़वामी शोहरत हासिल हुई उन में कन्जुल ईमान, हदाइके बछिश और फ़तावा र-ज़विया (तख़्रीज शुदा तादमे तहरीर 27 जिल्दें) भी शामिल हैं, आखिरुज्ज़िक्र तो उलूमो फुनून का ऐसा बहरे बे करां है जो बे शुमार व मुस्तनद मसाइल और तहकीकाते नादिरा को अपने अन्दर समोए हुए है, जिसे पढ़ कर क़द्रदान इन्सान बे साख़ा पुकार उठता है कि इमामे अहले सुन्नत, सच्चिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

की मुज्जहिदाना बसीरत का परतौ है। आप

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ⁶ की कुतुब रहती दुन्या तक मुसलमानों के लिये मशअले राह हैं। हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि सरकारे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ⁶ की जुम्ला तसानीफ़ का हस्बे इस्तिताअत ज़रूर मुता-लआ करे।

أَكْثَرُهُمُ الْمُجْرِمُونَ⁶ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गैर सियासी तहरीक “दा’वते इस्लामी” नेकी की दा’वत, एहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अ़ज्ञे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उम्र को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअद्वद मजालिस का कियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिय्या” भी है जो दा’वते इस्लामी के ड़-लमा व मुफ़ितयाने किराम رَكْنُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए जैल छ⁶ शो’बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| (1) शो’बए कुतुबे आ'ला हज़रत | (2) शो’बए तराजिमे कुतुब |
| (3) शो’बए दर्सी कुतुब | (4) शो’बए इस्लाही कुतुब |
| (5) शो’बए तफ़तीशे कुतुब | (6) शो’बए तख़्रीज |

“अल मदीनतुल इल्मिय्या” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्पृ रिसालत, मुज़दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आ़लिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम

अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अःस्ते हाजिर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्त्र सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअःती म-दनी काम में हर मुम्किन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएः छोड़ने वाली कुतुब का खुद भी मुता-लआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा 'वते इस्लामी” की तमाम मजलिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मय्या” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़ी अःता फ़रमाए और हमारे हर अ-मले खैर को जेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें जेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअः में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اَمِين بِجَاهِ الْبَيِّنِ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ



र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पेश लफ़ज़

ज़ेरे نज़रِ رِسَالَةٍ ”رَأَى الْقَحْطَ وَالْوَبَاءِ بِدُعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُؤَاسَةِ الْفُقَرَاءِ“^{عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ} दर हक्कीकत स-दक्षा व खैरात की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत से मु-तअल्लिक है। आ'ला हज़रत, अज़ीमुल ब-र-कत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान ^{عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ} ने मज़ूरा रिसाले में साठ (60) अहादीसे करीमा और इन से माखूज पच्चीस फ़वाइद के ज़रीए स-दक्षा व खैरात की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत को साबित किया है, इलावा अज़ीं मौजूअ की मुना-सबत से बतौरे तरगीब चन्द वाकिअ़ात भी इस रिसाले में शामिल हैं नीज स-दक्षा व खैरात को ज़ियादा नाफ़ेअ बनाने के लिये आ'ला हज़रत ^{عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ} ने चन्द अहम उम्र भी इर्शाद फ़रमाए हैं जो इस रिसाले की ज़ीनत में इज़ाफ़े का सबब हैं, येह रिसालए मुबा-रका तक़ीबन एक सो बारह साल क़ब्ल 1312 हि. में क़-लमे रज़ा की जुम्बिश से सफ़्हए किरतास पर उभरा और अपने मौजूअ के ए'तिबार से उम्मते मुस्लिमा को रहती दुन्या तक ^{إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ} फ़ाएदा पहुंचाता रहेगा, इसी बात के पेशे नज़र “मजलिस : अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत ^{رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ}“ ने इस की इशाअ़त का एहतिमाम फ़रमाया है।

अ़वाम की सहूलत के पेशे नज़र अ़-रबी इबारात और जगह जगह मुश्किल मक़ामात पर ह़वाशी की सूरत में ह़त्तल मक़दूर तरजमा और तस्हील की भी कोशिश की गई है ताकि किताब पढ़ने और समझने में दुश्वारी पेश न आए नीज उ-लमाए किराम और मुह़क्मिन साहिबान के लिये ह़वाशी ही के माबैन तख्तीजात भी दर्ज कर दी गई हैं ताकि अस्ल माखूज से रुजूअ करने में आसानी रहे। इस सिल्सिले में मौलाना

अ़ब्दुर्रशीद हुमायूं अल म-दनी की ख़िदमात से इस्तफ़ादा किया गया है, जब कि नज़रे सानी का काम मौलाना अ़ब्दुर्रज़ाक अल अ़त्तारी अल म-दनी और मौलाना यूनुस अ़ली अ़त्तारी अल म-दनी ने सर अन्जाम दिया है ताकि ग़-लती का इम्कान कम से कम हो ।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अराकीने मजलिस : “अल मदीनतुल इल्मिय्या” की येही कोशिश रही है कि ऐसी में’यारी और दीदा जैब कुतुब आप की ख़िदमत में पेश की जाएं जो आप के जौके इल्मी के ऐन मुताबिक़ हों । येह सब हमारे मीठे मीठे मुर्शिदे करीम शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा’वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी **مَدْعُولُهُ الْعَالِي** की नज़रे करम व शफ़्क़त का फैज़ान है । **الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** इस रिसाले के हाशिये का नाम “राहे खुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल” आप **مَدْعُولُهُ الْعَالِي** ही ने अ़ता फ़रमाया है ।

अल्लाह तअ़ाला से दुआ है कि हमें इख़्लास की दौलत से मालामाल करते हुए हमारी इस काविश को अपनी बारगाहे बेकस पनाह में श-रफ़े क़बूलिय्यत से नवाज़े और ता दमे आखिर मस्लके आ’ला हज़रत **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ** के लिये ख़िदमात अन्जाम देते रहने की तौफ़ीक मर्हमत फ़रमाए ।

اَمِين بِجَاهِ الْبَنِي اَلْمَدِينِ مَلِي اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

मजलिस : “अल मदीनतुल इल्मिय्या”
(शो’बए कुतुबे आ’ला हज़रत **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**)

27 ज़ी क़ा’दा 1425 हि.

9 जनवरी 2005 ई.

फ़ेहरिस्त

नंबर	मज़ामीन	संख्या
1	एक अलाके का रवाज है कि जब वहां हैज़ा, चेचक और क़हूत-साली वग़ैरा आ जाए तो दफ़े बला के वासिते अहले मह़ल्ला मिल जुल कर दा'वत पकाते हैं, फु-क़रा व उँ-लमा को भी खिलाते हैं और खुद अहले मह़ल्ला भी उस में से खाते हैं, क्या ऐसी सूरत में त़आमे मत्खूखा का खाना मह़ल्ला दारों को जाइज़ है या नहीं ?	12
2	मुश्तरिका दा'वत में से अहले दा'वत को खाना जाइज़ है।	13
3	बे मन्हु शर-ई, इरतिकाबे मुमा-न-अ़्त, जहालत व जुऱअत है।	13
4	अहले मह़ल्ला का मिल जुल कर खाना तयार करना ताकि इस में से मसाकीन व फु-क़रा, उँ-लमा व सु-लहा, अइज़ज़ा व अकारिब और पड़ोसी सब ही खाएं, अब्बाबे जन्नत की ता'दाद के बराबर आठ ख़ूबियों का हामिल है।	14
5	अहमिय्यत व फ़ज़ीलते स-दक़ा व ख़ैरात से मु-तअ़्लिक़ अहादीसे करीमा।	15
6	स-दक़ा अल्लाह तआला के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़अ़ करता है।	15
7	आधा छूहारा स-दक़ा करना भी दोज़ख़ से बचने का सबब हो सकता है।	15
8	मुसल्मान का स-दक़ा उँप्र को बढ़ाता है।	15
9	अल्लाह तआला स-दक़े के सबब से बुरी मौत के सतर दरवाज़े दफ़अ़ फ़रमाता है।	16
10	स-दक़ा बुराई के सतर दरवाज़े बन्द करता है।	16
11	स-दक़ा सतर बलाओं को रोकता है जिन में सब से हल्की जुज़ाम व बरस है।	17
12	सुब्ह सबरे स-दक़ा दो कि बला स-दक़े से आगे क़दम नहीं बढ़ाती।	17
13	स-दक़ा बुरी क़ज़ा को टाल देता है।	17

14	खुफ्या व ज़ाहिर कसरत से स-दक़ा करने से रिज़्क दिया जाता है और बिगड़ियां संवर जाती हैं।	18
15	मोमिन और ईमान की कहावत	19
16	अपना खाना परहेज़ गारें को खिलाओ और अपना नेक सुलूक सब मुसल्मानों को दो।	19
17	जो रिज़्क में बुस्थृत और माल में ब-र-कत चाहता है, वोह रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करे।	20
18	तक्वा व सिलए रेहमी से रिज़्क बसीअ़, उम्र दराज़ और बुरी मौत दूर होती है।	20
19	तमाम नेकियों में जल्द तर सवाब सिलए रेहमी का है।	21
20	सिलए रेहमी करने वाले मोहताज नहीं हो सकते।	21
21	भलाई के काम बुरी मौतों और आफ़तों से बचाते हैं, जो दुन्या में एहसान वाले हैं वोही आखिरत में एहसान वाले होंगे।	22
22	भलाई के काम करने वाले सब से पहले जनत में जाएंगे।	23
23	मुसल्मान भाई का दिल खुश करना, मूजिबे मणिफ़रत और इन्दल्लाह बा'द अज़ फ़राइज़ महबूब तरीन अमल है।	23
24	जो अपने मुसल्मान भाई को उस की चाहत की चीज़ खिलाए अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ हराम कर दे।	25
25	गरीब मुसल्मानों को खाना खिलाना रहमत को वजिब कर देता है।	25
26	अल्लाह तआला के हां द-रजा बुलन्द करने वाली अश्या येह हैं : i. सलाम को फैलाना ii. लोगों को खाना खिलाना, iii. रात को नमाज़ पढ़ना, जब लोग सो रहे हों।	26
27	लोगों को खाना खिलाने वाले के फ़ज़ाइल।	27
28	मेहमान अपना रिज़्क ले कर आता है और खिलाने वालों के गुनाह ले कर जाता है।	29

29	इस्लामी भाइयों को खाना खिलाने की फ़ृज़ीलत ।	29
30	खाना मिल कर, बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाने में ब-र-कत होती है ।	30
31	तीन चीज़ों में ब-र-कत है ।	31
32	एक आदमी की ख़ूराक दो को और दो की चार को किफ़ायत करती है ।	31
33	अल्लाह तआला का हाथ जमाअत पर है ।	31
34	पसन्दीदा तरीन खाना अल्लाह तआला के नज़्दीक वोह है जिस पर हाथों की कसरत हो ।	31
35	मुश्तरिका तौर पर खाना तयार कर के खाने और उ-लमा व सु-लहा व मसाकीन व अविर्बा को खिलाने से पच्चीस (25) फ़िवाइद हासिल होने की उम्मीद है ।	31
36	ब ग-रजे हुसूले शिफ़ा व दफ़े बला, पांच मु-तफ़र्रिक अश्या को जम्म करने का एक अ़जीब नुस्ख़े नाफ़िआ ।	34
37	बुजुगने दीन और अस्लाफ़े किराम से मन्कूल मु-तफ़र्रिकात को जम्म करने की मुबारक तरकीबें ।	35
38	जम्म मु-तफ़र्रिकात की कामिल नज़ीर ।	37
39	करामते ओलिया व रुयाए सालिहा से ला इलाज मरीज़ दुरुस्त हो गए ।	37
40	सात बरसों से बहने वाला फोड़ा ठीक हो गया ।	37
41	इमाम हाकिम साहिबे मुस्तदरक के मुंह पर निकले फोड़े दुरुस्त हो गए ।	38
42	स-दक़ा व ख़ैरात को ज़ियादा नाफ़े़अ बनाने के लिये चन्द उमूर को मल्हूज़ रखना ज़रूरी है ।	39
43	क़हूत-साली के ज़माने में मुसल्मानों का मिल जुल कर, मुश्तरिका तौर पर खाना तयार कर के खुद भी खाना और दूसरों को भी खिलाना बहुत ही मुनासिब है ।	43
44	मआखिज़ो मराजेअ	44

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मस्अला अज़् कानपूर, मद्रसा फैज़े आम, मुर-सला : मौलवी अहमदुल्लाह तिलमीजे मौलवी अहमद हसन साहिब 17 रबीउल आखिर शरीफ 1312 हि.

क्या फ़रमाते हैं उँ-लमाए दीन व मुफ़ितयाने शर-ए मतीन इस मस्अले में कि हमारे दियार⁽¹⁾ में इस तरह का रवाज है कि कोई बिलाद में हैज़ा, चेचक व क़हूत-साली वगैरा आ जाए तो दफ़े बला के वासिते जमीअ⁽²⁾ महल्ले वाले मिल कर फ़ी सबीलिल्लाह अपनी अपनी हस्बे इस्तिताअत चावल, गेहूं व पैसा वगैरा उठा कर खाना पकाते हैं और मौलवियों और मुल्लाओं को भी दा'वत कर के उन लोगों को भी खिलाते हैं और जमीअ महल्ला दार भी खाते हैं, आया इस सूरत में महल्ला दार को त़आमे मत्बूख़ा⁽³⁾ का खाना जाइज़ होगा या न ? त़आमे मत्बूख़ा खाने के लिये मानेअ व गैर मानेअ⁽⁴⁾ पर क्या हुक्म दिया जाता है ? ⁽⁵⁾ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल जवाब

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الحمد لله الذي وضع البركة في جماعة الإخوان وقطع
الهلكة بتوacial الأحباء والجيران والصلوة والسلام على
صاحب الشفاعة مجتب الدعوة ومحب الجماعة دافع البلاء و

1. शहर या अलाक़ा, यहां मुराद बंगाला है कि येह सुवाल कानपूर में वहीं से आया था और कानपूर से जवाब लिखने के लिये बरेली भेजा गया।

2. तमाम

3. पका हुवा खाना

4. रुकावट डालने वाले और न डालने वाले

5. बयान करो ताकि अज्ञ दिये जाओ।

اللوباء والقطط والمجائعة على الله وصحبه وجماعة المسلمين وعلىنا فيهم يا أرحم الراحمين أمين، أمين، يا ربنا أمين! ⁽¹⁾

फेंले मज्कूर, ब किस्साए मस्तूर⁽²⁾ और अहले दा'वत को वोह
खाना खाना शरअन जाइज़ व रवा⁽³⁾, जिस की मुमा-न-अत शर-ए
मतहर में अस्लन⁽⁴⁾ नहीं,

قال الله تعالى :

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا⁽⁵⁾.

तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि खाओ मिल कर या अलग अलग ।
तो बे मन्य शर-ई, इरतिकाबे मुमा-न-अत, जहालत व ज़्यूअत⁽⁶⁾ ।

⁽⁷⁾ نَجْرَ وَأَنَا قُولُ وَبِاللَّهِ التَّوْفِيقُ نजर کیجیے تو یہ اُمَل چند دھاڑوں کا نुسخہ جامے آ⁽⁸⁾ ہے کہ اس سے مساکین⁽⁹⁾ و فुکرا بھی

- 1.** तमाम ता'रीफ़ें उस जात के लिये जिस ने भाइयों के इज्जिमाअ़्र में ब-र-कत फ़रमाई और अहले महब्बत और पड़ोसियों की मुलाकात व सिला में मुसीबत को क़त्अ़ फ़रमाया और सलातों सलाम मालिके शफ़्तअूत, दा'वत को कबूल, जमाअूत से महब्बत, मुसीबत व बला और भूक और कहूत को दफ़अ करने वाली जात पर और उन की आल व अस्हाब और मुसलमानों की जमाअूत और उन के साथ हम पर, या अर-हमराहिमीन, आमीन, आमीन, आमीन, ऐ हमारे रब कबूल फ़रमा ! **2.** मस्अले की सुत्रों में ज़िक्र कर्दा तरीका

3. सहीह **4.** बिल्कुल **5.** पारह 18, अन्नूर : 61

6. बिगैर किसी वज्जे शर-ई के मन्त्र करना कम इल्मी व बेबाकी है ।

7. मैं (या'नी अहमद रज़ा ख़ान) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** की तौफ़ीक के साथ कहता हूं ।

8. मुकम्मल नुसखा

9. मिस्कीन की जम्मु, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी ر-ज़वी "رسايلے اُتھاریخ्यا هِسْسَاءِ دامت برکاتُهُمُ النَّعَالِيَّةُ" अब्बल" में मिस्कीन की शर-ई ता'रीफ़ बयान फ़रमाते हैं कि मिस्कीन वोह शख्स है जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोहताज है कि लोगों से सुवाल करे और इसे सुवाल हलाल है । तफ़्सील बहारे शरीअूत हिस्सए पञ्चम से मला-हजा फ़रमाएं ।

(रसाइले अत्तारिया हिस्साए अव्वल, स. 128, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

खाएंगे, ड़-लमा व सु-लहा⁽¹⁾ भी, अ़ज़ीज़ो रिश्तेदार भी, क़रीब व अहले जवार⁽²⁾ भी, तो इस में ब अ़ददे अब्बाबे जनत⁽³⁾ आठ खूबियां हैं :

- i. फ़ज़ीलते स-दक्का
- ii. खिदमते सु-लहा
- iii. सिलए रेहम⁽⁴⁾
- iv. मुवासाते जार⁽⁵⁾
- v. सुलूके नेक से मुसल्मानों, खुसूसन गु-रबा का दिल खुश करना
- vi. इन की मरगूब चीजें, इन के लिये मुहय्या करना ।
- vii. मुसल्मान भाइयों को खाना देना
- viii. मुसल्मानों का खाने पर मुज्जमेअ⁽⁶⁾ होना

और इन सब उम्रू को, जब ब निय्यते सालिहा⁽⁷⁾ हों, बि इज़्जिल्लाहि तआला रिजाए खुदा, अ़फ़वे ख़ता व दफ़े बला में दख़ले ताम है⁽⁸⁾ । ज़ाहिर है कि क़हूत, बबा, हर मुसीबत व बला गुनाहों के सबब आती है ।

قَالَ اللَّهُ تَعَالَى : وَمَا أَصَابُكُمْ مِنْ مُّصِيَّةٍ فِيمَا كَسَبْتُمْ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ۔⁽⁹⁾

तो अस्बाबे मणिफ़रत व रिज़ा व रहमत बिला शुबा इस के उम्दा इलाज हैं ।

1. ड़-लमा अ़लिम की जम्मू है या'नी इल्म वाला, अ़लिम वोह है जो किसी दूसरे की मदद के बिगैर दरपेश मसाइल का हल तलाश कर सके और सु-लहा, सालेह की जम्मू है, इस से मुराद नेक लोग हैं ।
2. पड़ोस में रहने वाले
3. जनत के दरवाजों की तादाद के बराबर
4. रिश्तेदारों से मिलना जुलना, तअल्लुक़ात बहाल रखना सिलए रेहमी कहलाता है अहादीस में सिलए रेहमी की बहुत ज़ियादा ताकीद आई है ।
5. पड़ोसियों की ग़म ख़वारी
6. इकट्ठा
7. अच्छी और नेक निय्यती के साथ
8. तो अल्लाह तआला के हुक्म से रिजाए इलाही, गुनाहों की बख़िशाश व मणिफ़रत और मुसीबतों के टलने में मुकम्मल दऱज है
9. अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया : “और जो मुसीबत तुम्हें पहुंची वोह इस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया, और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है”

(पारह : 25, अश्शूरा : 30, तर-ज-मए कन्जुल ईमान)

अब (۱) **अह़ादीس सुनिये :**

हडीس ۱ : हुज़ूरे पुरनूर سच्चिदुल मुर-सलीن صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فَرِمَاتे हैं :

”إِن الصَّدَقَةَ لِتَطْفِئِ غَضْبَ الرَّبِّ وَتَدْفَعُ مِيتَةَ السَّوءِ“۔

رواه الترمذی وحسنه وابن حبان في صحيحه عن أنس بن مالک
رضي الله تعالى عنه (۲)۔

हडीس ۲ : कि फ़रमाते हैं :

”اَنْقُوا النَّارَ وَلَا يُشْقِّ تَمْرَةً فَإِنَّهَا تَقِيمُ الْعَوْجَ وَتَدْفَعُ مِيتَةَ السَّوءِ“

الحاديـث، روأه أبو يعلى والبزار عن الصديـق الأكـبر
رضي الله تعالى عنه (۳)۔

हडीس ۳ : कि फ़रमाते हैं :

”إِن صَدَقَةَ الْمُسْلِمِ تَزِيدُ فِي الْعُمَرِ، وَتَمْنَعُ مِيتَةَ السَّوءِ“۔

رواه الطبراني وأبوبكر بن مقيم في جزئه عن عمرو بن عوف
رضي الله تعالى عنه (۴)۔

1. अल्लाह तअ्ला की तौफ़ीक से

2. “बेशक स-दक्षा रब के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़्ع करता है।”
इसे तिरमिज़ी और इब्ने हब्बान ने अपनी सहीह में अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه से रिवायत किया, तिरमिज़ी ने इस को हसन क़रार दिया

[سنن الترمذی، كتاب الزکاة، باب ماجاء في الصدقة، ج ۲، ص ۱۴۶، رقم الحديث: ۶۶۴]

3. “दोज़ख से बचो अगर्चे आधा छूहारा दे कर कि वोह टेढ़ेपन को सीधा और बुरी मौत को दूर करता है” अल हडीس । अबू या’ला और बज़ज़ार ने इसे सिद्दीके अकबर رضي الله تعالى عنه से रिवायत किया

[مستند أبي يعلى، مستند أبي بكر الصديق، ج ۱، ص ۵۸، رقم الحديث: ۸۰، دار الكتب العلمية، بيروت]

4. “बेशक मुसल्मान का स-दक्षा उम्र को बढ़ाता है और बुरी मौत को रोकता है” । इसे तु-बरानी और अबू बक्र बिन मुकीम ने अपनी जु़ج में अम्र बिन औफ़ رضي الله تعالى عنه سے रिवायत किया

[المعجم الكبير، ج ۳۱، ص ۲۲، ۲۳، رقم الحديث: ۱۷، المكتبة الفيصلية، بيروت]

हडीस 4, 5 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”الصدقة تطفئ الخطيئة وتقى ميّة السوء“ - رواه الطبراني

في الكبير عن رافع بن مكث الجهنمي رضي الله تعالى عنه^(١)

دُوَسَرِي رِوَايَتِ مِنْهُ :

”الصدقة تمنع ميّة السوء“ رواه أحمد عنه والقضاعي عن

أبي هريرة رضي الله تعالى عنهما^(٢) -

हडीس 6 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”إِنَّ اللَّهَ لِيَدْرُؤُ بِالصَّدَقَةِ سَبْعِينَ بَابًا مِنْ ميّةِ السُّوءِ“ - رواه

الإمام عبد الله بن مبارك في كتاب البر عن أنس بن مالك

رضي الله تعالى عنه^(٣) -

हडीس 7 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”الصدقة تسد سبعين بابا من السوء“ رواه الطبراني في

الكبير عن رافع بن خديج رضي الله تعالى عنه^(٤) -

1. ”س-दका गुनाह को बुझाता है और बुरी मौत से बचाता है।“ इसे तृ-बरानी ने कबीर में राफेअُ बिन मकीस अल जुहनी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[الترغيب والترهيب، الترغيب في الصدقة والتحث عليها الخ، ج ٢، ص ١٢، رقم الحديث ٤١، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. ”س-दका बुरी मौत को रोकता है।“ इसे احمدने राफेअُ बिन मकीस से और क़र्ज़ाई ने अबू हुरएरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[كتاب العمال، كتاب الزكاة، قسم الأقوال، ج ٢، ص ٤٨، رقم الحديث ١٥٩٧٧، دار الكتب العلمية، بيروت]

3. ”बेशक अल्लाह स-दके के सबब से सतर दरवाजे बुरी मौत के दफ़अ़ फ़रमाता है।“ इसे إمام اَब्दुल्लाह बिन مُعاوِرَكَ نे किंताबुल बिर में अनस बिन مालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[الترغيب والترهيب، الترغيب في الصدقة الخ، ج ٢، ص ٧، رقم الحديث ٢١، دار الكتب العلمية بيروت]

4. ”स-दका बुराई के सतर दरवाजे बन्द करता है।“ इसे तृ-बरानी ने कबीर में राफेअُ बिन ख़दीज رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[المعجم الكبير، ج ٤، ص ٢٧٤، رقم الحديث ٤٤٠٢، المكتبة الفيصلية، بيروت]

हडीस 8 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”الصدقة تمنع سبعين نوعاً من أنواع البلاء أهونها الجذام“

والبرص“ رواه الخطيب عن أنس رضي الله تعالى عنه^(۱) -

हडीس 9, 10 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”بَا كَرُوا بِالصَّدْقَةِ فَإِنَّ الْبَلَاءَ لَا يَخْطَأُهَا“ - رواه الطبراني عن

أمير المؤمنين علي و البيهقي عن أنس رضي الله تعالى عنهمـا^(۲) -

हडीس 11 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”الصدقات بالغدوات يذهبن بالعاهات“ رواه الديلمي عن

أنس رضي الله تعالى عنه^(۳) -

हडीس 12 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”الصدقة تمنع القضاء السُّوءِ“ رواه ابن عساكر عن جابر

رضي الله تعالى عنه^(۴) -

1. “س-دका سत्तर किस्म की बलाओं को रोकता है जिन में आसान तर बला, बदन बिगड़ना और सफेद दाग हैं।” इसे ख़तीब ने अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[تاریخ بغداد، باب ذکر من اسمه الحارث، الحارث بن النعمان، ج ۸، ص ۲۰۴، رقم الترجمة ۴۳۶، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. “سुब्ह سवेरे س-دका दो कि बला س-दके से आगे क़दम नहीं बढ़ाती।” इसे ت-बरानी ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अली और बैहकी ने अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[المعجم الأوسط، باب الميم من اسمه محمد، ج ۴، ص ۱۸۰، رقم الحديث ۵۶۴۳، دار الكتب العلمية بيروت]

3. “سुब्ह के س-दके आफ़त को दूर कर देते हैं।” इस को دैलमी ने अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[الفردوس بمأثور الخطاب، ج ۲، ص ۴۱۴، دار الكتب العلمية، بيروت]

4. “س-دका बुरी कज़ा को टाल देता है।” इस को इब्ने اُसाकिर ने जाविर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत किया

[ابن عساكر]

हडीस 13 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”صلوا الذي بينكم و بين ربكم بكثرة ذكركم له وكثرة

الصدقة بالسر والعلانية ترزقوا وتنصروا وتحببوا“ - رواه ابن

ماجة عنه رضي الله تعالى عنه ^(۱) -

हडीس 14 تا 17 : कि फ़रमाते हैं :

”الصدقة تطفئ الخطية كما يطفئ الماء النار“ رواه

الترمذی وقال حسن صحيح عن معاذ بن جبل و نحوه ابن حبان

في صحيحه عن كعب بن عجرة وكأبي يعلى بسنده صحيح عن

جابر رضي الله تعالى عنهم وابن المبارك عن عكرمة مرسلاً

بسند حسن ^(۲) -

हडीس 18 : कि फ़रमाते हैं :

”مثل المؤمن ومثل الإيمان كمثل الفرس في أخته

يجول ثم يرجع إلى أخته وإن المؤمن يشهد ثم يرجع إلى الإيمان

- “اللَّهُ أَكْبَرُ” ^{عَزَّوَجَلَ} के साथ, उस की याद और खुफ्या व ज़ाहिर स-दक़ा की कसरत से अपनी निस्बत दुरुस्त करो, तो तुम रोज़ी और मदद दिये जाओगे और तुम्हारी बिगड़ियां संवर जाएंगी ।“ इसे इब्ने माजह ने जाबिर ^{رضي الله تعالى عنه} से रिवायत किया

[سنن ابن ماجة، كتاب إقامة الصلاة، باب فرض الجمعة، ج ٢، ص ٥، رقم الحديث ١٠٨١، دار المعرفة، بيروت]

- “س-دक़ा गुनाह को बुझा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है ।“ इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया और हःसन سहीह कहा मुआज़ बिन जबल से और ऐसे ही इब्ने हब्बान ने अपनी سहीह में का’ब बिन उजरह से, इसी तरह अबू या’ला ने ब स-नदे سहीह जाबिर ^{رضي الله تعالى عنه} से और इब्ने मुबारक ने इक्रिमा से मुर-सलन ब स-नदे हःसन रिवायत किया

[سنن الترمذی، كتاب الإيمان، باب ماجاء في حرمة الصلاة، ج ٤، ص ٢٨٠، رقم الحديث ٢٦٥، دار الفكر، بيروت]

فَأَطْعَمُوا طَعَامَكُمُ الْأَتْقِياءِ وَلَوْلَا مَعْرُوفُكُمُ الْمُؤْمِنِينَ ”رواه البيهقي في شعب الإيمان وأبونعيم في الحلية عن أبي سعيد الخدري رضي الله تعالى عنه⁽¹⁾ -

इस हडीस से ज़ाहिर कि मुआ-ल-जए गुनाह⁽²⁾ में नेकों को खाना खिलाना और आम मुसल्मानों के साथ अच्छा सुलूक करना चाहिये ।

हडीس 19 : कि فَرِمَاتَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :

”إِن الصَّدَقَةَ وَصْلَةُ الرَّحْمَنِ يُزِيدُ اللَّهُ بِهِمَا فِي الْعُمُرِ وَيُدْفَعُ
بِهِمَا مِيَةُ السَّوْءِ وَيُدْفَعُ بِهِمَا الْمُكْرُوهُ وَالْمَحْذُورُ“ رواه أبو يعلى
عن أنس رضي الله تعالى عنه⁽³⁾ -

हडीس 20 : कि فَرِمَاتَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :

1. “मुसल्मान और ईमान की कहावत ऐसी है जैसे चरागाह में घोड़ा अपनी रस्सी से बंधा हुवा कि चारों तरफ़ चर कर फिर अपनी बन्दिश की तरफ़ पलट आता है, यूँ ही मुसल्मान से भूल हो जाती है फिर ईमान की तरफ़ रुजू़ लाता है तो अपना खाना परहेज़ गारों को खिलाओ और अपना नेक सुलूक सब मुसल्मानों को दो ।” इसे बैहकी ने शु-अब्दुल ईमान में और अबू नुएम ने हिल्या में अबू सईद खुदरी رضي الله تعالى عنه से रिवायत किया [شعب الإيمان، ج ٧، ص ٤٥٢، رقم الحديث ١٠٩٤، دار الكتب العلمية، بيروت، حلية الأولياء، عبد الله بن مبارك، ج ٨، ص ١٩١، رقم الحديث ١١٨٤٩، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. गुनाहों का इलाज

3. “बेशक स-दक्षा और सिलाए रहूम, इन दोनों से अल्लाह तभ़ुला उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत को दफ़अ करता है और मकर्लह और अन्देशे को दूर करता है ।” इसे अबू या’ला نے अनस رضي الله تعالى عنه से रिवायत किया

[مسند أبي يعلى ، مسند أنس بن مالك ، ج ٣ ، ص ٣٩٨ ، رقم الحديث ٤٠٩٠ ، دار الكتب العلمية ، بيروت]

”من أحب أن يبسط له في رزقه وينسأله في أثره فيصل رحمه“ رواه البخاري عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه⁽¹⁾ -

हृदीस 21, 22 : कि फ़रमाते हैं :

”من سره أن يمد له في عمره، ويتوسّع له في رزقه، ويدفع عنه ميّة السوء، فليتّق الله ولّيصل رحمه“ رواه عبد الله ابن الإمام في زوائد المسند والبزار بسنّد جيدٍ والحاكم في المستدرك عن أمير المؤمنين عليٍّ كرم الله تعالى وجهه وحاكم نحوه في حديث عن عقبة بن عامر رضي الله تعالى عنه⁽²⁾ -

हृदीस 23 : कि फ़रमाते हैं :

”صلة القرابة مثارة في المال‘ محبة في الأهل‘ منسأة في الأجل“ - رواه الطبراني بسنّد صحيح عن عمرو بن سهل رضي الله تعالى عنه⁽³⁾ -

1. ”जो चाहता है कि इस के रिज़क में वुस्अत्, माल में ब-कत हो, वोह अपने रिश्तेदारों से नेक सुलूक करे।“ इसे इमाम बुखारी ने हज़रते अबू हुरैरा سे رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत किया। [صحیح البخاری، کتاب الأدب، باب من بسط الخ، ج ٤، ص ٩٧، رقم الحديث ٥٩٨٦، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. ”जिसे पसन्द हो कि इस की उम्र दराज, रिज़क वसीअ़ और बुरी मौत दफ़अ़ हो, वोह अल्लाह से डरे और अपने रिश्तेदारों से नेक सुलूक करे।“ इसे اُब्दुल्लाह इब्ने इमाम ने ज़वाइदुल मस्नद में और बज़ार ने ब स-नदे जय्यिद और हाकिम ने मुस्तदरक में अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अलीؑ سे رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ الترغيب والترهيب، کتاب البر والصلة، باب الترغيب في صلة الرحم، ج ٣، ص ٢٢٧، رقم الحديث ٤، دار الكتب العلمية، بيروت]

3. ”करीबी रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक, माल को बहुत बढ़ाने वाला, आपस में बहुत महब्बत दिलाने वाला, उम्र को ज़ियादा करने वाला है।“ इसे त-बरानी ने सहीह सनद के साथ अम्र बिन سहल سे رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ رिवायत किया।

[المعجم الأوسط، با الميم من اسمه محمود، ج ٢، ص ١١، رقم الحديث ٧٨١٠، دار الكتب العلمية، بيروت]

حدیس 24 : کی فرماتے ہیں : ﷺ

”صلة الرحم تزيد في العمر“ - رواه القضاوي عن ابن مسعود رضي الله تعالى عنه ^(١) -

हदीस 25 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”إن أَعْجَلَ الْبُرُثُوَابَ لِصَلَةِ الرَّحْمِ حَتَّىٰ أَهْلَ الْبَيْتِ“

لِيَكُونُونَ فَجْرَةً فَتَنَمُوا أَمْوَالَهُمْ وَيُكْثِرُ عَدْدَهُمْ إِذَا تَوَاصَلُوا“ - رواه
الطبراني عن أبي بكر رضي الله تعالى عنه⁽²⁾ -

दूसरी रिवायत में इतना और है :

”وما من أهل بيت يتواصلون فيحتاجون“ رواه ابن حبان

فی صحیحه⁽³⁾

हदीस 26 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

- “سیل اے رہومی سے ٹپر بढھتی ہے! ” اسے کجڑاً نے اینے مسٹر بُد سے ریوایت کیا । [کنز العمال، کتاب الأخلاق، قسم الأقوال، باب صلة الرحم و الترغيب فيها، ح ۱۴۳، ص ۲، رقم الحديث ۶۹۰۶، دار الكتب العلمية، بیروت]
 - “بے شک سب نئکیوں مें جल्द تر سواب مें سیل اے رہومی ہے یہاں تک کہ گھر والے فاسیک بھی ہونे तो این के مال جیسا دا ہوتے ہیں اور این कے شومار بढھتے ہیں جب آپس مें سیل اے رہوم کरें! ” اسے ت۔ بارانی نے انبو بکراہ سے ریوایت کیا [مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب صلة الرحم وقطعها، ج ۸، ص ۲۷۸، رقم الحديث ۱۳۴۵۶، دار الفکر، بیروت، المعجم الأوسط، من اسمه أحمد، ج ۱، ص ۳۰۷، رقم الحديث ۱۰۹۲، دار الكتب العلمية، بیروت، إن هذه الرواية بالمعنى واللفظ غيرها]
 - “کوئی گھر والے اسے نہیں کہ آپس مें سیل اے رہوم کरें فیر مودھتا ج ہو جائے! ” [صحیح ابن حبان، کتاب البر والإحسان، ذکر خبر الدال، ج ۱، ص ۳۳۳، رقم الحديث ۴۴۱، دار الكتب العلمية، بیروت]

”صلة الرحم وحسن الخلق وحسن الجوار يعمرن الديار ويزدن في الأعمار“ رواه الإمام أحمد والبيهقي في الشعب بسند صحيح على أصولنا عن أم المؤمنين الصديقة رضي الله تعالى عنها^(۱).

हृदीस 27 : कि فَرِمَاتِهِ هُوَ مَنْ :

”صنائع المعروف تقي مصارع السوء والآفات والهلكات وأهل المعروف في الدنيا هم أهل المعروف في الآخرة“ - رواه الحاكم في المستدرك عن أنس رضي الله تعالى عنه^(۲).

हृदीस 28 : कि فَرِمَاتِهِ هُوَ مَنْ :

”صنائع المعروف تقي مصارع السوء والصدقة خفياً تطفئ غضب رب وصلة الرحم زيادة في العمر وكل معروف صدقة وأهل المعروف في الدنيا هم أهل المعروف في الآخرة وأهل المنكر في الدنيا هم أهل المنكر في الآخرة وأول من يدخل

1. “سیل اے رہومی اور ہوسے خوکلکی اور ہمسا اے سے نےک سولوک، شاہروں کو آباد اور ڈپروں کو جی�ادا کرتے ہیں!“ اسے امام احمد اور بہکٹی نے شاہراں میں ب س-نداہ سہیہ سے رضی اللہ تعالیٰ عنہا ریوایت کیا [کنز العمال، کتاب الأخلاق، قسم الأقوال، باب صلة الرحم الخ، ج ۳، ص ۱۴۳، رقم الحديث ۶۰۹۷، دار الكتب العلمية، بیروت]
2. “نےک سولوک کے کام بُری مُؤتمنوں، آفکتوں اور ہلالکتوں سے بچاتے ہیں اور دُنْیا میں اہسان و لذت کے لئے ایک ایسا نامہ میں اہساناں و لذتاں ہونے گے!“ اسے ہاکیم نے مُسْتَدْرَک میں انس سے ریوایت کیا [کنز العمال، کتاب الزکاة، قسم الأقوال، الفصل الأول في الترغيب فيها، رضی اللہ تعالیٰ عنہ ج ۶، ص ۱۴۷، رقم الحديث ۱۵۹۶۲، دار الكتب العلمية، بیروت]

الجنة أهل المعروف“ رواه الطبراني في الأوسط عن أم المؤمنين،
أم سلمة رضي الله تعالى عنها ^(١) -

हृदीस 29 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”إن من موجبات المغفرة إدخالك السرور على أخيك المسلم“ رواه الطبراني في الكبير والأوسط عن الإمام سيدنا الحسن بن علي كرم الله تعالى وجوههما ^(٢) -

हृदीस 30 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”أحب الأعمال إلى الله تعالى بعد الفرائض إدخال السرور على المسلم“ رواه فيهما عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهم ^(٣) -

हृदीस 31 تا 33 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

1. “भलाइयों के काम बुरी मौतों से बचाते हैं और पोशीदा खैरात रब का ग़ज़ब बुझाती है और रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक उम्र में ब-र-कत है और हर नेकी स-दक़ा है और दुन्या में एहसान वाले, वोही आखिरत में एहसान पाएंगे और दुन्या में बदी वाले वोही आखिरत में बदी देखेंगे और सब में पहले जो जन्त में जाएंगे वोह नेक बरताव वाले हैं।“ इसे तु-बरानी ने औसत में उम्मुल मुअमिनीन उम्मे स-लमा رضي الله تعالى عنها से रिवायत किया।

[المعجم الأوسط، باب الميم من اسمه موسى، ج ٤، ص ٣١، رقم الحديث ٢٠٨٦، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. “बेशक मणिफरत वाजिब कर देने वाली चीजों में से तेरा अपने मुसल्मान थाई का जी खुश करना है।“ इसे तु-बरानी ने कबीर में और औसत में इमाम सव्यिदुना हसन बिन अली كرم الله وجوههما से रिवायत किया

[المعجم الأوسط، باب الميم من اسمه موسى، ج ٢، ص ١٢٩، رقم الحديث ٨٢٤٥، دار الكتب العلمية، بيروت]

3. “اللّٰهُ تَعَالٰى اَنْتَ اَنْتَ الْمُسْلِمُونَ“ के फ़राइज़ के बा’द सब आ’माल से ज़ियादा प्यारा अ़मल मुसल्मान का जी खुश करना है।“ तु-बरानी ने दोनों में इन्हे अब्बास رضي الله تعالى عنها से रिवायत किया

[المعجم الأوسط، باب الميم من اسمه محمود، ج ٦، ص ٣٧، رقم الحديث ٧٩١١، دار الكتب العلمية، بيروت]

”أفضل الأعمال إدخال السرور على المؤمن كسوت عورته، أو أشبعـت جوعـته، أو قـضـيـت لـه حـاجـة“ رواهـ فيـ الأـوـسـطـ عـنـ أمـيرـ الـمـؤـمـنـينـ عـمـرـ الـفـارـوقـ الـأـعـظـمـ وـ نـحـوهـ أـبـوـ الشـيـخـ فـيـ الشـوـابـ وـ الـأـصـبـهـانـيـ فـيـ حـدـيـثـ عـنـ اـبـنـ عـبـدـ الـلـهـ وـ اـبـنـ أـبـيـ الدـنـيـاـ عـنـ بـعـضـ أـصـحـابـ النـبـيـ صـلـىـ اللـهـ تـعـالـىـ عـلـيـهـ وـسـلـمـ (١)ـ

حدیس 34 : کی فرماتے ہیں : ﷺ

”من وافق من أخيه شهوة غفرله“ رواه العقيلي والبزار و
الطبراني في الكبير عن أبي الدرداء رضي الله تعالى عنه قوله
ـ شواهد في الالبي (2)ـ

حدیس 35 : کی فرماتے ہیں : ﷺ

”من أطعم أخاه المسلم شهوة حرمه الله على النار“ - رواه

البيهقي في شعب الإيمان عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه ^(١) -

हृदीस 36 : कि फरमाते हैं :

”من موجبات الرحمة إطعام المسلم المسكين“ رواه

الحاكم وصححه، ونحوه البيهقي وأبو الشيخ في الثواب عن
جابر رضي الله تعالى عنه ^(٢) -

हृदीस 37 تا 46 : कि फरमाते हैं :

”الدرجات إفشاء السلام وإطعام الطعام والصلة بالليل

والناس نiam“ قطعة من حديث جليل نقيس جميل مشهور

مستفيده مفيد مفيض ، رواه إمام الأئمة أبوحنيفه والإمام أحمد

وعبد الرزاق في مصنفه والترمذى والطبرانى عن ابن عباس ، و

أحمد والترمذى والطبرانى وابن مردويه عن معاذ بن جبل وابن

خرزيمة والدارمى والبغوى وابن السكن وأبونعيم وابن بسطة

عن عبد الرحمن بن عائش وأحمد والطبرانى عنه عن صحابي و

البزار عن ابن عمر وعن ثوبان والطبرانى عن أبي أمامة وابن قانع

عن أبي عبيدة بن الجراح والدارقطنى وأبوبكر النيسابوري في

الزيادات عن أنس وأبوفرج في العلل تعليقاً عن أبي هريرة وابن

أبي شيبة مرسلاً عن عبد الرحمن بن سابط رضي الله تعالى عنهم -

1. ”जो अपने मुसल्मान भाई को उस की चाहत की चीज़ खिलाए, अल्लाह तआला उसे दोज़ख पर हराम कर दे।“ इसे बैहकी ने شـ-अबुल ईमान में अबू हुरैरा سे رفعـ اللـهـ تـعـالـاـعـ عـنـهـ [شعب الإيمان، ج ٣٢٨٢، رقم الحديث ٢٢٢، ص ٣٥، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. ”रहमते इलाही वाजिब कर देने वाली चीजों में से गरीब मुसल्मानों को खाना खिलाना है।“ रिवायत किया इसे हाकिम ने और इस की तस्हीह की, ऐसे ही बैहकी और الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، سے رفعـ اللـهـ تـعـالـاـعـ عـنـهـ [باب الترغيب في إطعام الطعام الخ، ج ٢، رقم الحديث ٩، دار الكتب العلمية، بيروت]

في رؤية النبي صلى الله تعالى عليه وسلم رب عزوجل و وضعه تعالى كفه كما يليق بجلاله العظيم بين كتفيه صلى الله تعالى عليه وسلم فتجلى لي كل شيء وعرفت وفي رواية "تعلمت ما في السموات والأرض" وفي أخرى "ما بين المشرق والمغارب" وقد ذكرناه مع تفاصيل طرقه وتنوع الفاظه في كتابنا المبارك إن شاء الله تعالى سلطنة المصطفى في ملوكوت كل الورى والحمد لله ما أولى^(١) -

1. "اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَذِهِ الْأَرْضِ" **الْأَرْضُ** **के** यहां द-रजा बुलन्द करने वाले हैं, सलाम का फैलाना और हर तरह के लोगों को खाना खिलाना और रात को लोगों के सोते में नमाज् अदा करना" येह हदीसे जलील, नफीس, जमील, मशहूर, मुस्तफीद, मुफीद, मुफीज् का एक टुकड़ा है। रिवायत किया इसे इमामुल अहम्मा अबू हनीफा और इमाम अहमद और अब्दुर्रज्जाक ने अपने [سنن الترمذى، كتاب التفسير، باب ومن سورة (ص)، ج، ٥، ص ١٥٩، رقم الحديث ٣٢٤٤، دار الفكر، بيروت] [سنن الترمذى، كتاب التفسير، باب حديث (ص)، ج، ٥، ص ١٦٠، رقم الحديث ٣٢٤٦، دار الفكر، بيروت، إن هذه الرواية بالمعنى واللفظ غيرها] व त्-बरानी और इन्हे मरदूया ने मुआज् बिन जबल से व त्-बरानी और इन्हे बस्ता ने अब्दुर्रहमान इन्हे खुजैमा व दारिमी व बग़वी व इन्हे سकن व अबू نुएम और इन्हे बस्ता ने अब्दुر्रहमान बिन आयश से, और अहमद व त्-बरानी ने इन्हीं से और इन्हों ने एक सहाबी से [المسند للإمام أحمد بن حنبل، باب حديث بعض أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، باب في مدارك آراء النبي صلى الله عليه وسلم في المنام، ج، ٧، ص ٣٦٨، رقم الحديث ٢٣٢٧٠، دار الفكر، بيروت] [مجمل الرواائد، كتاب التعبير، باب في مدارك آراء النبي صلى الله عليه وسلم في المنام، ج، ٧، ص ٣٦٩، رقم الحديث ٣٦٩، دار الفكر، بيروت] [المعجم الكبير، عن أبي عبد الله عاصي بن عاصي، باب في ذكر الصورة، ج، ٨، ص ٣٤٩، رقم الحديث ٨١١٧، المكتبة الفيصلية، بيروت] [العلل المتناهية، باب في ذكر الصورة، ج، ١، ص ٣١، رقم الحديث ١٠، دار الكتب العلمية، بيروت] [كتن العمال، كتاب الموعظة المخصوصة، ج، ١٦، ص ١٠٢، رقم الحديث ٤٤٣١٤، دار الكتب العلمية، بيروت] [الموعظة، فصل في الموعظة المخصوصة، ج، ١٦، ص ١٠٢، رقم الحديث ٤٤٣١٤، دار الكتب العلمية، بيروت] [العلل المتناهية، باب في ذكر الصورة، ج، ١، ص ٣٤، رقم الحديث ١٠، دار الكتب العلمية، بيروت] [أبو بكر الصديق، باب في ذكر الصورة، ج، ١، ص ٣٤، رقم الحديث ١٠، دار الكتب العلمية، بيروت]

میرک़ات شاریف में है :

”إِطْعَامُ الطَّعَامِ أَيْ إِعْطَاءُهُ لِلأَنَامِ مِنَ الْخَاصِ وَالْعَامِ“^(۱)

हृदीस 47 : कि फ़रमाते हैं :

”الكفارات إطعام الطعام وإفساد السلام والصلوة بالليل“

والناس نيام۔ رواه الحاكم وصحح سنده عن أبي هريرة
رضي الله تعالى عنه^(۲)۔

हृदीस 48 : कि फ़रमाते हैं :

”من أطعم أخاه حتى يتبعده وسقاه من الماء حتى يرويه باعد

الله من النار سبع خنادق ما بين كل خندقين مسيرة خمس مائة عام“

= اُब्दुर्रहमान बिन सावित् हुजूर [ابن أبي شيبة] سे [رضي الله تعالى عنه] مें है कि ”अल्लाह तआला के दीदार वाली रिवायत, जिस में है कि “अल्लाह तआला ने अपनी शायाने शान कफे मुबारक को हुजूर उल्लो व السلام (हुजूर) के कर्त्त्वों के दरमियान रखा (हुजूर) [العليل المتناهية، فَرَمَّا تَوْهِيْدَهُ]“ तो मेरे लिये हर चीज़ रोशन हो गई और मैं ने पहचान ली“ दूसरी रिवायत [باب في ذكر الصورة، ج ۱، ص ۳۳، رقم الحديث ۱۳، دار الكتب العلمية، بيروت] में है ”मैं ने मालूम कर ली जो चीज़ भी ज़मीन व आस्मान में है“ [مجموع الزوائد، كتاب التعبير، ج ۲، ص ۳۶۷، رقم الحديث ۱۱۷۳۹، دار الفكر، بيروت] باب فيمار آد النبي صلى الله عليه وسلم في المنام، ج ۲، ص ۳۶۷، رقم الحديث ۱۱۷۳۹، دار الفكر، بيروت [سنن الترمذى، كتاب التفسير، ”مَشَرِّكُ الْبَرِّ“ مें जो कुछ है] [سنن الترمذى، كتاب التفسير، ”مَشَرِّكُ الْبَرِّ“ مें जो कुछ है] और एक रिवायत में है ”مَشَرِّكُ الْبَرِّ“ [باب ومن سورة (ص)، ج ۵، ص ۳۲۴۵، رقم الحديث ۳۲۴۵، دار الفكر، بيروت] और हम ने इस हृदीस को तुरुक की तपसील और इखिलाफ़े अल्काज़ को अपनी मुबारक किताब ”الحمد لله“ में ज़िक्र कर दिया है، ”سُلْطَنُهُ الْمُضْطَهَنُ فِي مَلْكُوتِ كُلِّ الْوَرَى“

1. ”خانا खिलाना या’नी हर खासो आम को खाना देना मुराद है“

[سرقة المفاتيح، كتاب الصلاة، باب المساجد، الفصل الثاني، ج ۲، ص ۴۳۲، رقم الحديث ۷۲۱، دار الفكر، بيروت]

2. ”خانا खिलाना और सलाम को फैलाना और शब को लोगों के सोते में नमाज़ पढ़ना, गुनाह मिटाने वाले हैं“ इसे हाकिम ने سहीह سनद के साथ हज़रते अबू हुरैरा [رضي الله تعالى عنه] से रिवायत किया।

[المستدرك للحاكم، كتاب الأطعمة، باب إطعام الطعام، ج ۵، ص ۱۷۹، رقم الحديث ۷۲۵۵، دار المعرفة، بيروت]

رواہ الطبرانی فی الکبیر و أبو الشیخ فی الثواب والحاکم مصححا

سنده و البیهقی عن ابن عمر رضی الله تعالیٰ عنہما^(۱)۔

हدیس 49 : کि فَرْمَاتِهُ هُنَّ

”إِنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَ يَبْاهِي مَلَكَتَهُ بِالَّذِينَ يَطْعَمُونَ الطَّعَامَ

مِنْ عَبِيدِهِ“ - رواه أبو الشیخ عن الحسن البصري مرسلاً^(۲)۔

हدیس 50, 51 : کि فَرْمَاتِهُ هُنَّ

”الْخَيْرُ أَسْرَعُ إِلَى الْبَيْتِ الَّذِي يَوْكِلُ فِيهِ مِنَ الشَّفَرَةِ

إِلَى سَنَامِ الْبَعِيرِ“ - رواه ابن ماجة عن ابن عباس وابن أبي الدنيا

عَنْ أَنْسِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ^(۳)۔

हدیس 52 : کि فَرْمَاتِهُ هُنَّ

”الْمَلَائِكَةُ تَصْلِيُ عَلَى أَحَدٍ كَمَا دَامَتْ مَائِدَتِهِ مَوْضِعَهُ“

رواہ الأصبهانی عن أم المؤمنین الصدیقة رضی الله تعالیٰ عنہا^(۴)۔

1. ”जो अपने मुसल्मान भाई को पेट भर कर खाना खिलाए, प्यास भर पानी पिलाए, अल्लाह तआला उसे दोज़ख से साथ खाइयां दूर कर दे। हर दो खाइयों के दरमयान पांच सो बरस की राह हो।“ इसे त-बरानी ने कबीर में और अबुश्शैख^{رض} ने सवाब में और हाकिम ने سहीह^{رض} سनद के साथ और बैहकी ने इन्हे उमर^{رض} سے रिवायत किया [الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في اطعام الطعام وسكنى الماء الخ، ج ۲، ص ۳۶، رقم الحديث ۱۴، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. ”अल्लाह तआला अपने फ़िरिश्तों के साथ मुबाहात फ़र्माता है अपने उन बन्दों के बारे में, जो लोगों को खाना खिलाते हैं।“ इसे अबुश्शैख^{رض} ने हङ्सन बसरी से मुर-सलन रिवायत किया [الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب في اطعام الطعام وسكنى الماء الخ، ج ۲، ص ۳۸، رقم الحديث ۲۱، دار الكتب العلمية، بيروت]

3. ”जिस घर में लोगों को खाना खिलाया जाए, खेरो ब-र-कत उस घर की तरफ़ इस से भी ज़ियादा जल्द पहुंचती है जितनी जल्द छुरी ऊंट के कोहान की तरफ़।“ इसे इन्हे माजह ने इन्हे अब्बास से और इन्हे अबिदुन्या ने अनस^{رض} سे रिवायत किया [سنن ابن ماجة، كتاب الأطعمة، باب الضيافة، ج ۴، ص ۵۱، رقم الحديث ۳۵۷، دار المعرفة، بيروت]

4. ”जब तक तुम में से किसी का दस्तर ख़्वान बिछा रहता है उतनी देर तक फ़िरिश्ते उस पर दुरूद भेजते रहते हैं।“ इसे अस्बाहानी ने उम्मल मुअम्नीन سिद्हीक़ा^{رض} سे रिवायत किया [الترغيب والترهيب، كتاب البر والصلة، باب الترغيب في الضيافة، ج ۳، ص ۲۰۰، رقم الحديث ۱۳، دار الفكر، بيروت]

हृदीस 53 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”الضييف يأتي برزقه ويرتحل بذنوب القوم يمحص عنهم

ذنبهم“ - رواه أبو الشيخ عن أبي الدرداء رضي الله تعالى عنه⁽¹⁾ -

हृदीस 54 : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى جَدِيدِ الْكَرِيمِ وَعَلَيْهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمَ ساخियदुना इमामे हःसन मुज्जतबा की हृदीस में है :

”لأن أطعم أخالي في الله لقمة أحب إلى من أن أتصدق على مسكين بدرهم، ولأن أعطى أخالي في الله درهماً أحب إلى من أن أتصدق على مسكين بمائة درهم“ - رواه أبو الشيخ في الشواب عن جده صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلِّمَ ولعل الأظهر وقفه كالذى يليه⁽²⁾ -

हृदीस 55 : ساخियदुना अमीरुल मुअमिनीन मौलिल मुस्लिमीन अळी मुर्तज़ा فَرِمَاتे हैं :

1. “मेहमान अपना रिज्क ले कर आता है और खिलाने वालों के गुनाह ले कर जाता है, उन के गुनाह मिटा देता है”। इसे अबुशैख ने अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत किया

[كتنز العمال، كتاب الغيبة، باب في ترغيب الضيافة، الفصل الأول، ج ٩، ص ١٠٧، رقم الحديث، ٢٥٨٣، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. “बेशक मेरा अपने किसी इस्लामी भाई को एक निवाला खिलाना मुझे इस से ज़ियादा पसन्द है कि मिस्कीन को एक रुपिया दूँ, और अपने इस्लामी भाई को एक रुपिया देना मुझे इस से ज़ियादा प्यारा है कि मिस्कीन पर सो रुपिया खैरात करूँ।” इसे अबुशैখ ने سَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلِّمَ سے، इन्होंने अपने नानाजान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे

रिवायत किया, और अज़्हर येह है कि येह हृदीस आयिन्दा हृदीस की तरह हज़रते हसन

(الترغيب والترهيب، كتاب الصدقات، الترغيب)

في اطعام الطعام وسقي الماء والترهيب من منعه، ج ٢، ص ٣٨١، رقم الحديث ٢٤، دار الكتب العلمية، بيروت]

”لأن أجمع نفرا من إخوانني على صاع، أو صاعين من طعام أحب إليّ من أدخل سوقكم فاشترى رقبة فأعتقها“ - رواه منه وفقا عليه رضي الله تعالى عنه⁽¹⁾ -

हृदीस 56 : कि सहाबा رضي الله تعالى عنهم ने अर्ज की या रसूलल्लाह ! हम खाते हैं और सेर नहीं होते, फ़रमाया : इकट्ठे हो कर खाते हो या अलग अलग ? अर्ज की : अलग अलग, फ़रमाया :

”اجتمعوا على طعامكم واذكروا اسم الله يبارك لكم فيه“ رواه أبو داؤد وابن ماجة وحبان عن وحشی بن حرب رضي الله تعالى عنه⁽²⁾ -

हृदीस 57 : फ़रमाते हैं : صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

”كلوا جميماً ولا تفرقوا فإن البركة مع الجماعة“ - رواه

ابن ماجة وال العسكري في الموعظ عن أمير المؤمنين عمر رضي الله تعالى عنه بسند حسن⁽³⁾ -

हृदीस 58 : कि फ़रमाते हैं : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

1. “मैं अपने चन्द बिरादराने दीनी को तीन सेर या छ⁶ सेर खाने पर इकट्ठा करूं तो ये हम मुझे इस से जियादा महबूब है कि तुम्हारे बाजार में जाऊं और एक गुलाम ख़रीद कर आजाद कर दूं।“ इसे अबुशैख⁷ ने हज़रते अली⁸ से मौकूफ़न रिवायत किया

[التغيب والترهيب، كتاب الصدقات، التغيب في اطعام الطعام وسفى النساء، والترهيب من سمع، ج ٢، ص ٣٨، رقم الحديث ٢٢، دار الكتب العلمية، بيروت]

2. “जम्मू हो कर खाओ और अल्लाह तआला का नाम लो तुम्हारे लिये इसी में ब-र-कत रखी जाएगी।“ इसे अबू दावूद, इब्ने माजह और हब्बान ने वहशी बिन हर्ब⁹ से रिवायत किया

[سن أبي داؤد، كتاب الأطعمة، باب في الاجتماع على الطعام، ج ٣، ص ٤٨٦، رقم الحديث ٣٧٦٤، دار إحياء التراث العربي، بيروت]

3. “मिल कर खाओ और जुदा न हो कि ब-र-कत जमाअत के साथ है।“ इसे इब्ने माजह और अस्करी ने मवाझ¹⁰ में अमीरूल मुअम्मिन उमर¹¹ سे ब-स-नदे हैसन रिवायत किया

”البركة في ثلاثة في الجماعة والشيد والسحور“ رواه
الطبراني في الكبير والبيهقي في الشعب عن سلمان
رضي الله تعالى عنه (١)۔

हडीस 59 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”طعام الواحد يكفي الإثنين وطعم الإثنين يكفي الأربعة ويد

الله على الجماعة“ رواه البزار عن سمرة رضي الله تعالى عنه (٢)۔

हडीس 60 : कि फ़रमाते हैं : ﷺ

”إن أحب الطعام إلى الله (تعالى) ما كثرت عليه

الأيدي“ - رواه أبو يعلى والطبراني وأبو الشيخ عن جابر

رضي الله تعالى عنه (٣)۔

इन हडीसों से साबित हुवा कि जो मुसल्मान इस अ़मल में नेक नियत, पाक माल से शरीक होंगे उन्हें करमे इलाही व इन्हामे हज़रते रिसालत पनाही **٢٥** से **फ़ाएदे** मिलने की उम्मीद है :

1. “بـ-رـ-كـتـ تـيـنـ چـيـوـنـ مـئـنـ हـैـ، مـुـسـلـمـاـنـोـنـ कـेـ इـजـि�ـمـاـअـ، तـआـमـेـ सـरـीـदـ औـरـ तـआـमـेـ سـ-हـरـीـ मـेंـ।“ इसे तـ-बـरـा�ـनـीـ नـेـ कـबـीـरـ मـेंـ औـरـ बـैـहـकـीـ नـेـ शـअـبـ मـेंـ सـलـمـानـ **رضي الله تعالى عنه** से रिवायत किया ।

[المعجم الكبير، سليمان التميمي عن أبي عثمان النهدي، ج٦، ص٢٥١، رقم الحديث ٦١٢٧، دار إحياء التراث العربي، بيروت]

2. “एक आदमी की ख़ुराक दो को किफ़ायत करती है और दो की ख़ुराक चार को, अल्लाह तआला का हाथ जमाअत पर है।“ इसे बज़ार ने समुरा **رضي الله تعالى عنه** से रिवायत किया [بزار]

3. “बेशक सब खानों में ज़ियादा प्यारा अल्लाह (عزوجل) को वोह खाना है जिस पर बहुत से हाथ हों“ (या’नी खाने वालों की कसरत हो) इसे अबू या’ला और तـ-बـरـा�ـनـीـ औरـ अबु शैशबـ **رضي الله تعالى عنه** से रिवायत किया [الترغيب والترهيب، كتاب الطعام، ج٣، ص٩٨، رقم الحديث ٥، دار الكتب العلمية، بيروت]

- i. بِأَذْنِهِ تَعَالَى بُرُّى مौत से बचेंगे। हडीस 1, 2, 3, 4, 5, 6, 19, 21, 22, 27, 28 (ग्यारह हडीसें) सत्तर दरवाजे बुरी मौत के बन्द होंगे। हडीस 6।
- ii. उम्रें जियादा होंगी। हडीस 3, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 26, 28, (नव हडीसें)।
- iii. इन की गिनती बढ़ेगी। हडीस 25। ये ही तीन फ़ाएदे खास दफ्तर वबा से मु-तअल्लिक हैं।
- iv. रिज़क की वुस्अत्, माल की कसरत होगी। हडीस 13, 20, 21, 22, 23, 25 (छठे हडीसें)
- v. ख़ैरों क-र-कत पाएंगे। हडीस 50, 51, 56, 57, 58 (पांच हडीसें), ये ही दोनों फ़ाएदे दफ्तर कहूत से मु-तअल्लिक हैं।
- vi. आफ़तें बलाएं दूर होंगी। हडीस 7, 8, 9, 10, 11, 12, 27 (सात हडीसें)। बुरी क़ज़ा टलेगी, हडीस 2। सत्तर दरवाजे बुराई के बन्द होंगे, हडीस 7। सत्तर किस्म की बला दूर होगी। हडीस 8।
- vii. उन के शहर आबाद होंगे, हडीस 26।
- viii. शिकस्ता हाली दूर होगी, हडीस 13।
- ix. ख़ौफ़े अन्देशा, ज़ाइल और इत्मीनाने ख़ातिर ह़ासिल होगा, हडीस 19।
- x. मददे इलाही शामिले हाल होगी। हडीस 13, 59 (दो हडीसें)।
- xi. रहमते इलाही उन के लिये वाजिब होगी, हडीस 36।
- xii. मलाएका उन पर दुरुद भेजेंगे, हडीस 52।
- xiii. रिजाए इलाही के काम करेंगे। हडीस 30, 31, 32, 33, 60 (पांच हडीसें)।
- xiv. ग़ज़बे इलाही उन पर से ज़ाइल होगा, हडीस 1।
- xv. उन के गुनाह बख्शे जाएंगे। हडीस 4, 5, 14, 15, 16, 17, 18, 29, 34, 47, 53 (ग्यारह हडीसें)। मग़िफ़रत उन के लिये वाजिब होगी, हडीस 29। उन के गुनाहों की आग बुझ जाएगी। हडीस 4, 5, 14,

15, 16, 17 (छ हडीसें) | येह दस फ़ाएदे दफ़्टे क़हूत व बबा हर गूना अमराज़ व बला व क़ज़ाए हज़ात व ब-रकात व सआदात को मुफ़ीद हैं⁽¹⁾ ।

xvi. ख़िदमते अहले दीन में स-दक़ा से बढ़ कर सवाब पाएंगे, हडीस 54 ।

xvii. गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा अज़ लेंगे, हडीस 55 ।

xviii. उन के टेढ़े काम दुरुस्त होंगे, हडीस 2 ।

xix. आपस में महब्बतें बढ़ेंगी, जो हर खैर ख़बी की मुत्तबेअ⁽²⁾ हैं, हडीस 23 ।

xx. थोड़े सर्फ़⁽³⁾ में बहुत का पेट भरेगा कि तन्हा खाते तो दूना उठता⁽⁴⁾, हडीस 59 । ⁽⁵⁾ وَفِيهِ أَحَادِيثٌ لَمْ نُذَكِّرْهَا

xxi. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर द-रजे बुलन्द होंगे । हडीस 37 ता 46, (दस हडीसें) ।

xxii. मौला तबा-र-क व तअ्लाला, मलाएका से उन के साथ मुबाहात⁽⁶⁾ फ़रमाएगा, हडीस 49 ।

xxiii. रोज़े कियामत दोज़ख से अमान में रहेंगे । हडीस 2, 35, 48, (तीन हडीसें) । आतशे दोज़ख⁽⁷⁾ उन पर हराम होगी, हडीस 35 ।

xxiv. आखिरत में एहसाने इलाही से बहरा मन्द⁽⁸⁾ होंगे कि निहायते मक़सिद व ग़ायते मुरादात⁽⁹⁾ हैं, हडीस 27, 28 ।

xxv. खुदा ने चाहा तो उस मुबारक गुरौह में होंगे जो हुज़ूरे पुरनूर सन्धिदे अ़ालम सरवरे अकरम ﷺ की ना'ले अक्दस के तसदुक⁽¹⁰⁾ में सब से पहले दाखिले जन्नत होगा, हडीस 28 ।

1. क़हूत-साली को दूर करने, दफ़्टे आफ़ात, हर नोइयत के मरज़ से नजात, हज़ात के पूरा होने और बाइसे हुसूले ब-रकात व खुश बख़ती के लिये फ़ाएदे मन्द हैं ।

2. पैरवी करती या इस के पीछे पीछे चली आती 3. ख़र्च

4. दुगना ख़र्च आता 5. इस बारे में और भी अहादीस हैं जिन का हम ने ज़िक्र नहीं किया

6. फ़ख़ 7. दोज़ख की आग 8. फ़ाएदा उठाने वाले

9. मक़सिद की इन्तिहा और मुरादों का अन्जाम 10. चप्पल मुबारक के सदके

अल्लाहु अब्बर, गौर कीजिये بِحَمْدِ اللّٰهِ कैसा नुसख़् ए जलीला,
जमीला⁽¹⁾, जामिआ⁽²⁾, काफिया⁽³⁾, शाफिया⁽⁴⁾, साफिया⁽⁵⁾, वाफिया⁽⁶⁾ है
कि एक मुफ्तद⁽⁷⁾ दवा और इस क़दर मनाफ़े प्रे जां फ़िज़ा⁽⁸⁾, وفضل الله أوسع⁽⁹⁾
وأكْبَرُ وَأطِيبُ وَأكْثَرُ⁽⁹⁾ । उँ-लमा तो ब ग-रजे हुसूले शिफ़ा व दफ्तर बला,
मु-तफर्रिक अश्या जम्मु फ़रमाते हैं कि अपनी जौजा⁽¹⁰⁾ को उस का
महर⁽¹¹⁾ कुल या बा'ज़ दे, वोह उस में से कुछ ब-तीबे ख़ातिर⁽¹²⁾ उसे
हिबा⁽¹³⁾ कर दे इन दामों⁽¹⁴⁾ का शहद व रोगने जैतून⁽¹⁵⁾ ख़रीदे बा'ज़
आयाते कुरआनिया, खुसूसन सूरए फ़तिहा और आयाते शिफ़ा, रिकाबी⁽¹⁶⁾
में लिख कर आबे बारां⁽¹⁷⁾ और वोह न मिले तो आबे दरिया से धोए,
क़दरे वोह रोगन व शहद मिला कर पिये, بِعَوْنَى تَعَالٰى हर मरज़ से शिफ़ा
पाए कि इस ने दो शिफ़ाएं कुरआन व शहद, दो ब-र-कतें बारान व
जैत⁽¹⁹⁾ और हनी व मरी जरे मौहबे महर⁽²⁰⁾, पांच चीजें जम्मउ कीं ।

- | | |
|---|--|
| 1. खूबसूरत, अच्छा | 2. मुकम्मल |
| 3. किफ़ायत करने वाला | 4. शिफ़ा देने वाला |
| 5. साफ़ | 6. खातिर ख़्वाह |
| 7. अकेली, बाहिद | 8. फ़रहत अंगेज़, दिल खुश करने वाले फ़ाएदे |
| 9. और अल्लाह का फ़ज़्ल बहुत वसीअ़, बहुत बड़ा, बहुत पाकीज़ा और बहुत ज़ियादा है। | |
| 10. बीवी | 11. ह़क़्के ज़ौजिय्यत, वोह रुपिया या जिस्म |
| जो मुसल्मानों के निकाह के वक्त मर्द के ज़िम्मे औरत को देना मुकर्रर किया जाता है | |
| 12. अपनी खुशी से, रिज़ा मन्दी के साथ | |
| 13. अ़ता कर दे, तसरुफ़ का इश्क़ियार दे दे | |
| 14. पैसों या रक़म | 15. ज़ैतून का तेल |
| 16. प्लेट | 17. बारिश का पानी |
| 18. अल्लाह तभ़ाला की मदद से | 19. बारिश और ज़ैतून का तेल |
| 20. ब खुशी हिबा किया हवा माले महर | |

لقوله تعالى: **نَزَّلْتُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شَفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ**^(۱) وقوله تعالى: **فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ**^(۲) . وقوله تعالى: **وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَرِّكًا**^(۳) . وقوله تعالى: **شَجَرَةٌ مُبَارَكَةٌ زَيْتُونَةٌ**^(۴) . وقوله تعالى: **فَإِنْ طِبَنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مُرِيَّا**^(۵) -

या'नी “हम उतारते हैं कुरआन से वोह चीज़ कि शिफा व रहमत है ईमान वालों के लिये” । “शहद में शिफा है लोगों के लिये” । “और उतारा हम ने आस्मान से ब-र-कत वाला पानी” और “मुबारक पेड़ जैतून का” फिर अगर औरतें अपने जी की खुशी के साथ तुम्हें महर में से कुछ दें दें तो उसे खाओ रचता पचता⁽⁶⁾ ।”

इन मुबारक तरकीबों की तरफ हज़रते अमीरुल मुअमिनीन, मौलाल मुस्लिमीन, अळी मुर्तज़ा शेरे खुदा मुश्किल कुशा व हज़रते सच्यिदुना औफ़ बिन मालिक अशर्जई رضي الله تعالى عنه ने हिदायत फ़रमाई । इन्हे अबी हातिम अपनी तप्सीर में ब स-नदे हःसन हज़रते मौला अळी رضي الله تعالى عنه से रावी कि उन्होंने ने फ़रमाया :

”إِذَا اشْتَكَى أَحَدُكُمْ فَلِيَسْتُوْهِبْ مِنْ امْرَأَةٍ مِنْ صِدَاقَهَا

درهمًا فليشتربه عسلا ثم يأخذ ماء السماء فيجمع هنيئا مريئا

مبارك⁽⁷⁾ -

1. پ ۱۵، بی بی اسرائیل:

۸۲. پ ۱۲، بی بی اخیل:

2. پ ۹، ق ۲۶، ت ۳.

۲۹. پ ۱۲، بی بی اخیل:

3. پ ۲۵، ت ۲، النساء:

۳۵. پ ۵، النساء:

4. پ ۲۸، التور:

۳۵. پ ۲۵، النساء:

7- المواهب اللدنية ، المقصد الثامن ، الفصل الأول ، النوع الثاني ، ذكر طبه

صلى الله عليه وسلم لداء استطلاق البطن ، ج ۳ ، ص ۳۸ ، دار الكتب العلمية ، بيروت]

जब तुम में कोई बीमार हो तो उसे चाहिये अपनी औरत से उस के महर में से एक दिरहम हिंबा कराए, उस का शहद मोल ले फिर आस्मान का पानी ले कि रचता पचता ब-र-कत वाला जम्भु करेगा।

एक बार फ़रमाया :

إِذَا أَرَادَ كُم الشفاء فَلِيَكْتُبْ آيَةً مِنْ كِتَابِ اللَّهِ فِي
صَحْفَةٍ وَلِيَغْسِلَهَا بِماءِ السَّمَاءِ وَلِيَأْخُذْ مِنْ امْرَأَتِهِ دِرْهَمًا عَنْ
طَيْبِ نَفْسٍ مِنْهَا فَلِيَشْتَرِبْهُ عَسْلًا فَلِيَشِيرْبَهُ فَإِنْهُ شَفَاءٌ” ذَكَرَهُ
الإِمامُ الْقَسْطَلَانِيُّ فِي الْمَوَاهِبِ الْلَّدُنِيَّةِ^(۱)

अल्लामा ज़रकानी शहै मवाहिब में फ़रमाते हैं :
”مرض عوف بن مالك الأشجعى الصحابي رضي الله تعالى عنه فقال: أئتونى بما إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: ”وَتَزَّلَّنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَرِّكًا“ ثم قال: أئتونى بعسل وتلا الآية ”فِيهِ شَفَاءٌ لِلنَّاسِ“ ثم قال:
أئتونى بزيت وتلا ”مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ“ فخلط ذلك بعضه ببعض وشربه لشفاء^(۲)۔

ओफ़ बिन मालिक अशज़ी सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ^(۳) हुए,
फ़रमाया : पानी लाओ कि अल्लाह तभ्ला फ़रमाता है : “हम ने उतारा

1. जब तुम में से कोई शख्स शिफ़ा चाहे तो कुरआने अंग्रीम की कोई आयत रिकाबी में लिखे और बारिश के पानी से धोए और अपनी औरत से एक दिरहम उस की खुशी से ले ले उस का शहद ख़रीद कर पिये कि बेशक शिफ़ा है।” इमाम क़स्तलानी ने मवाहिबुल्लदुन्नियह में इसे ज़िक्र किया है।

صلى الله عليه وسلم لداء استطلاق البطن، ج ۳، من ۴۸، دار الكتب العلمية، بيروت، وجدت فيه بتغير قليل]

2. شرح العلامة الزرقاني على المواهب اللدنية، المقصد الثامن، الفصل الأول، النوع الثاني، ذكر طب صلى الله عليه وسلم لداء استطلاق البطن، ج ۹، ص ۴۹۴، ۴۹۳، دار الكتب العلمية، بيروت، وجدت فيه بتغير قليل -

3. बीमार

आस्मान से ब-र-कत वाला पानी” फिर फ़रमाया : शहद लाओ। और आयत पढ़ी कि “इस में शिफ़ा है लोगों के लिये”। फिर फ़रमाया : रोगने जैतून लाओ, और आयत पढ़ी कि “ब-र-कत वाले पेड़ से” फिर इन सब को मिला कर नोश फ़रमाया⁽¹⁾, शिफ़ा पाई।

तो जब मु-तफ़र्रिकात⁽²⁾ का जम्भ करना जाइज़ व नाफ़ेअ़ है तो ये ह तो एक ही दवा सब ख़ूबियों की जामेअ़ है इस की कामिल नज़ीर⁽³⁾ नुस्ख़ए इमामे अजल⁽⁴⁾ हज़रते सच्चिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक, शागिर्दें रशीद हज़रते इमामुल अहम्मा सच्चिदुना इमामे आ’ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا व नुस्ख़ए जलीला रुयाए हुज़रे पुरनूर सच्चिदुल मुर-सलीन रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ है, अ़ली बिन हुसैन बिन शकीक कहते हैं : मेरे सामने एक शख्स ने इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक से رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अर्ज़ की : ऐ अब्दुर्रह्मान ! सात बरस से मेरे एक ज़ानू में फोड़ा है किस्म किस्म के इलाज किये, तबीबों से रुजूअ़ की, कुछ नप़अ़ न हुवा। फ़रमाया :

”اذهب فانظر موضع ا يحتاج الناس إلى الماء فاحضر“

هناك بئراً فاني أرجوا أن تنبع لك هناك عين ويسرك عنك

الدم ، ففعل الرجل فبراً“ - رواه الإمام البيهقي عن علي قال

سمعت ابن المبارك وسئلته الرجل فذكره⁽⁵⁾ -

1. पी लिया 2. मुख्तलिफ़ चीज़ों 3. मुकम्मल मिसाल 4. बहुत बड़े इमाम
5. “जा ऐसी जगह देख जहां लोगों को पानी की हाजत हो वहां एक कूंवां खोद, (और इशाद फ़रमाया कि) मैं उम्मीद करता हूं कि वहां तेरे लिये एक चश्मा निकलेगा और तेरा ये ह खून बहना बन्द हो जाएगा। उस शख्स ने ऐसा ही किया और अच्छा हो गया।” इसे बैहकी ने अ़ली رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से रिवायत किया। फ़रमाया मैं ने इब्ने मुबारक से सुना, उन से एक शख्स ने सुवाल किया तो उन्होंने ने इस हडीस को ज़िक्र किया

[شعب الإيمان، ج ٣، ص ٢٢١، رقم الحديث ٣٣٨١، دار الكتب العلمية بيروت]

इमाम बैहकी फ़रमाते हैं : इसी कबील⁽¹⁾ से हमारे उस्ताद अबू अब्दुल्लाह हाकिम (साहिबे मुस्तदरक) की हिकायत है कि उन के मुंह पर फोड़े निकले, तरह तरह के इलाज किये, न गए, करीब एक साल के इसी हाल में गुज़रा, उन्होंने एक जुमुआ को इमाम उस्ताज़ अबू उस्मान साबूनी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ سَلَامٌ से उन की मजलिस में दुआ की दर-ख़्वास्त की, इमाम ने दुआ फ़रमाई और हाज़िरीन ने ब कसरत आमीन कही, दूसरा जुमुआ हुवा, किसी बीबी ने एक रुक़आ मजलिस में डाल दिया उस में लिखा था कि मैं अपने घर पलट कर गई और शब को अबू अब्दुल्लाह हाकिम के लिये दुआ में कोशिश की, मैं ख़्वाब में जमाले जहां आराए हुज़ूर रहमते आलम مَوْلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत से मुशरफ़ हुई⁽²⁾ गोया मुझे इर्शाद फ़रमाते हैं : ”⁽³⁾ قَوْلِي لَأَبِي عَبْدِ اللَّهِ يُوسِعُ الْمَاءَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ -“ इमाम बैहकी फ़रमाते हैं मैं वोह रुक़आ अपने उस्ताद हाकिम के पास ले गया, उन्होंने अपने दरवाज़े पर एक सकाया⁽⁴⁾ बनाने का हुक्म दिया, जब बन चुका उस में पानी भरवा दिया और बर्फ़ डाली और लोगों ने पीना शुरूअ़ किया एक हफ़्ता न गुज़रा था कि शिफ़ा ज़ाहिर हुई फोड़े जाते रहे, चेहरा उस अच्छे से अच्छे हाल पर हो गया जैसा कभी न था, इस के बाद बरसों ज़िन्दा रहे⁽⁵⁾ ।

बिल جुम्ला⁽⁶⁾ मुसल्मानों को चाहिये इस पाक मुबारक अ़मल में

1. क़िस्म

2. जिन के हुस्न से काएनात में ख़ूब सूरती है, उस रहमत वाले आक़ा ﷺ का ख़्वाब में दीदार नसीब हुवा,

3. “अबू अब्दुल्लाह से कह, मुसल्मानों पर पानी की वुस्अत करे”

4. पानी की सबील

5. شعب الإيمان، ج ٣، ص ٢٢٢، دار الكتب العلمية، بيروت-

6. तमाम

चन्द बातों का लिहाज़ वाजिब जानें कि इन मनाफ़े अंतर्गत जलील दुन्या व आखिरत से बहरा मन्द⁽¹⁾ हों।

i. तस्हीहे नियत⁽²⁾ कि आदमी की जैसी नियत होती है वैसा ही फल पाता है, नेक काम किया और नियत बुरी तो वोह कुछ काम का नहीं, ⁽³⁾ ”إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَاتِ“ तो लाज़िम कि रिया या नाम-वरी⁽⁴⁾ वगैरा अगराजे फ़ासिदा⁽⁵⁾ को अस्लन⁽⁶⁾ दख़ल न दें वरना नफ़अ़ दर किनार⁽⁷⁾ नुक़सान के सज़ावार⁽⁸⁾ होंगे । ⁽⁹⁾ وَالْعِبَادُ بِاللَّهِ تَعَالَى

ii. सिर्फ़ अपने सर से बला टालने की नियत न करें कि जिस नेक काम में चन्द तरह के अच्छे मक़ासिद हों और आदमी इन में एक ही की नियत करे तो उसी लाइक समरा⁽¹⁰⁾ का मुस्तहिक होगा ⁽¹¹⁾ ”إِنَّمَا لَكُلُّ امْرٍ مَا نُوِيَ“ जब काम कुछ बढ़ता नहीं सिर्फ़ नियत कर लेने में एक काम के दस हो जाते हैं तो एक ही नियत करना कैसी हमाक़त और बिला वज्ह अपना नुक़सान है। हम ऊपर इशारा कर चुके कि इस अमल में कितनी नेकियों की नियत हो सकती है इन सब का क़स्द⁽¹²⁾ करें कि सब के मनाफ़े अंत बल्कि हक़ीकतन इस अमल से बला टलना भी इन्ही नियतों का फल है जैसा कि हम ने अहादीस से रोशन कर दिया तो बिगैर इन नियतों ^{أَعْنَى} स-द-क़ए फु-क़रा व

1. फ़ाएदा उठाने वाले

2. नियत की दुरुस्तगी

[صحيح البخاري، كتاب بدء الوعي، باب كيف كان بدء الوعي على رسول الله صلى الله عليه وسلم، رقم الحديث ١، ص ٦، دار الكتب العلمية، بيروت]
3. ”آ‘माल का दारो मदार नियतों पर है“

4. शोहरत

5. बुरे मक़ासिद

6. बिल्कुल

7. एक तरफ़ रहा

8. सज़ा के हक़दार

9. अल्लाह तआला की पनाह

10. फल, बदला

11. ”हर शख़स को वोही हासिल होगा जिस की वोह

नियत करे“

[صحيح البخاري، كتاب بدء الوعي، باب كيف كان بدء الوعي على رسول الله صلى الله عليه وسلم، رقم الحديث ١، ص ٦، دار الكتب العلمية، بيروت]
ج 12. इरादा

ख़िदमते सु-लह़ा व सिलए रेहूम व एह्साने जार⁽¹⁾ वगैरा मज़कूरात के बला टलने की ख़ाली निय्यत पोस्ते बे मर्ज़⁽²⁾ हैं।

iii. अपने मालों की पाकी में हृद द-रजे की कोशिश बजा लाएं
कि इस काम में पाक ही माल लगाया जाए, **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** पाक है पाक
ही को क़बूल फ़रमाता है।

الشیخان والنسائی والترمذی وابن ماجة وابن خزيمة عن

أبي هريرة رضي الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله تعالى

عليه وسلم: "لَا يَقْبِلُ اللَّهُ إِلَّا طَيِّبٌ" هُوَ قَطْعَةٌ حَدِيثٌ وَفِي

الباب عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما⁽³⁾ -

नापाक माल वालों को येह रोना क्या थोड़ा है कि इन का स-दक्षा,
खेरात, फ़तिहा, नियाज़ कुछ कबूल नहीं, **وَالْعِيَادُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى** ।

iv. जिन्हार, जिन्हार⁽⁴⁾ ऐसा न कर कि खाते पीतों को बुलाएं, मोहताजों को छोड़ें कि जियादा मुस्तहिक् वोही हैं और उन्हें इस की हाजत है तो इन का छोड़ना उन्हें ईज़ा⁽⁵⁾ देना और दिल दुखाना है, मुसलमानों की दिल शिकनी⁽⁶⁾ مَعَاذُ اللّٰهِ वोह बलाए अजीम है कि सारे अमल को खाक

कर देगी, ऐसे खाने को हुजूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सब से बदतर खाना फ़रमाया कि पेट भरे बुलाए जाएं जिन्हें परवाह नहीं और भूके छोड़ दिये जाएं जो आना चाहते हैं।

مسلم عن أبي هريرة رضي الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم: ”شر الطعام طعام الوليمة يمنعها من يأتيها و يُدعى إليها من يأتاها“ وللطبراني في الكبير والديلمي في مسنن الفردوس بسنده حسن عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهمَا عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم بلفظ ”يدعى إليه الشبعان ويحبس عنه الجائع“ وفي الباب غيرهما ^(١)

V. फु-करा कि आएं कि उन की मदारात व ख़ातिर दारी⁽²⁾ में सअूये जमील⁽³⁾ करें, अपना एहसान उन पर न रखें बल्कि आने में उन का एहसान अपन ऊपर जानें कि वोह अपना रिज़क खाते और तुम्हारे गुनाह मिटाते हैं, उठाने, बिठाने, बुलाने, खिलाने, किसी बात में बरताव

1. इमाम मुस्लिम ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से बयान किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “बद तरीन खाना उस दा’वते बलीमा का खाना है कि जो इस में आना चाहता है उसे रोक दिया जाता है और जो नहीं आना चाहता उसे बुलाया जाता है” [صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب الامر بالجایة الداعي إلى دعوة، ص ٧٥٠، رقم الحديث ١١٠] [ت-بخاری نے کबीर में और دैलमी ने مسندुل فِرَدَوْس में स-नदे हसन के साथ इन्हें اُब्बास عَلَيْهِ الصَّلَوةُ وَالسَّلَامُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के वासिते से हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि गिरामी इस लफ़्ज़ से नक़ल किया कि “सेर शुदा को दा’वत दी जाए और भूके को रोका जाए” [المعجم الكبير، أبو العالية عن ابن عباس، ج ١٢، ص ١٢٣، رقم الحديث ١٢٧٥٤، دار إحياء التراث العربي، بيروت]

इस बारे में इन के इलावा ने भी अहादीस रिवायत की हैं ।

2. ख़ातिर तवाज़ोअ करना, ख़ूब खिदमत करने
3. अच्छी कोशिश

ऐसा न करें जिस से उन का दिल दुखे कि एहसान रखने, ईज़ा देने से स-दक्षा बिल्कुल अकारत जाता है :

”الَّذِينَ يُنْفَقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُشْعُونَ مَا آنفُقُوا مَنًّا

وَلَا أَدَى لَهُمْ أَجْرٌ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا حُوقٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ

مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ يَتَبَعَّهَا أَذَى ۝ وَاللَّهُ غَنِّيٌّ حَلِيمٌ ۝ يَا يُهَا

الَّذِينَ امْسَأُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتُكُمْ بِالْمَنِ وَالْأَذَى كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءً

النَّاسِ“⁽¹⁾ الآية .

जो लोग माल ख़र्च करते हैं अपने माल खुदा की राह में फिर अपने दिये के पीछे न एहसान रखें, न दिल दुखाना, उन के लिये उन का सवाब है अपने रब के पास, न उन पर खौफ और न वोह ग़म खाएं, अच्छी बात (कि हाथ न पहुंचा तो मीठी ज़बान से साइल को फैर दिया) और दर गुज़रे (कि फ़क़ीर ने नाहक़ हट⁽²⁾ या कोई बे जा ह-र-कत की तो इस पर ख़याल न किया, उसे दुख न दिया) ये ह उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के पीछे दिल सताना⁽³⁾ हो और अल्लाह बे परवाह है (कि तुम्हरे स-दक्षा व ख़ैरात की परवाह नहीं रखता, एहसान किस पर करते हो) हिल्म वाला है (कि तुम्हें बे शुमार ने'मतें दे कर तुम्हारी सख़्त सख़्त ना फ़रमानियों से दर गुज़र फ़रमाता है तुम एक निवाला मोहताज को दे कर वज्ह बे वज्ह उसे ईज़ा देते हो) ऐ ईमान वालो ! अपनी ख़ैरात अकारत⁽⁴⁾ न करो एहसान रखने और दिल सताने से उस की तरह जो माल ख़र्च करता है लोगों के दिखावे को (कि इस का स-दक्षा सिरे से अकारत है

وَالْعِيَادُ بِاللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

1. ۱۲۳۳۱۲:۴، البقرة

3. دل دخانا

2. विला वज्ह ज़िद

4. बरबाद, ज़ाएअ

इन सब बातों के लिहाज़ के साथ इस अमल को एक ही बार न करें बार बार बजा लाएं⁽¹⁾ कि जितनी कसरत होगी उतनी ही फु-क़रा व गु-रबा की मन्फ़अत⁽²⁾ होगी, इतनी अपने लिये दीनी व दुन्यवी व जिस्मी व जानी रहमत व ब-र-कत व ने'मत व सआदत होगी, खुसूसन अय्यामे क़हूत में तो जब तक عِيَادًا بِاللَّهِ क़हूत रहे रोज़ाना ऐसा ही करना मुनासिब कि इस में निहायत सहल⁽³⁾ तौर पर गु-रबा व मसाकीन की ख़बर गीरी⁽⁴⁾ हो जाएगी, अपने खाने में उन का खाना भी निकल जाएगा, देते हुए नफ़्स को मा'लूम भी न होगा और जमाअत की वज्ह से सो का खाना दो सो को किफ़ायत करेगा, क़हूते आमुर्रमाद⁽⁵⁾ में हज़रते सच्चिदुना अमीरुल मुअमिनीन उमर फ़ारूक़े आ'ज़म रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इसी का क़स्द ज़ाहिर फ़रमाया, وَبِاللَّهِ التَّوْفِيقُ وَهُدَايَةُ الطَّرِيقِ ।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ كि یےہ مु-تفارِّیر جواب نفیس و لَا جواب
اُن-ش-رائے اُس ساتھ مਾہے فَانِیخِر رబی' ڈل آخِیر⁽⁶⁾ کے تین جلسوں⁽⁷⁾ مें
تاس्वییدن⁽⁸⁾ و تبییجِن⁽⁹⁾ تماام اور ب لیہا جے تاریخ
نام رَأْدُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُؤَاسَةِ الْفُقَرَاءِ⁽¹⁰⁾ ہوا ।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام

عليه سيد المرسلين محمد وآلـه وصحبه أجمعـين و الله سـبـحـتـه و

تعالیٰ اعلم و علمہ جل مجده اُتم و احکم⁽¹⁰⁾۔

1. करें 2. फ़ाएदा 3. बहुत आसान 4. ख़ातिर तवाज़ोअ 5. ख़ाकिस्तरी के साल
 6. उम्दा महीने, रबीउस्सानी के दरमियानी दस दिनों 7. निशस्तों
 8. मुसव्वदा की तहरीर 9. नोक पलक संवार कर बेहतरी
 10. और हमारी दुआ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ूबियां **अल्लाह عَزُوجَل** को जो मालिक सरे जहान वालों का और रसूलों के सरदार मुहम्मद, इन की आल और तमाम सहाबा पर दुरुदो सलाम, **अल्लाह تَبَّا-رَكَبَ** तथा जियादा जानता है और उस का इल्म, उस की बजर्गी कमिल तरीन और बहुत जियादा मोहकम है।

مأخذ و مراجع

نمبر شار	كتاب	مصنف / مؤلف	طبعه
١	قرآن مجید	كلام بارى تعالى	پاک سعیت، الاهور
٢	كتن الإيمان	امام أحمد رضا خان عليه الرحمة	رضا اکیلیمی، بمبھی
٣	صحیح البخاری	محمد بن إسماعیل البخاری عليه الرحمة	دار الكتب العلمية بيروت
٤	صحیح مسلم	مسلم بن حجاج النیشاپوری عليه الرحمة	دار ابن حزم، بيروت
٥	صحیح ابن حبان	محمد بن حبان رحمة الله عليه	دار الكتب العلمية بيروت
٦	سنن الترمذی	محمد بن عیشی الترمذی رحمة الله عليه	دار الفکر، بيروت
٧	سنن أبي داؤد	أبی داؤد سلیمان بن أشعث رحمة الله عليه	دار إحياء التراث، بيروت
٨	سنن ابن ماجة	محمد بن یزید بن ماجة عليه الرحمة	دار المعرفة، بيروت
٩	المسند لإمام احمد	الإمام احمد بن حنبل رحمة الله عليه	دار الفکر، بيروت
١٠	مسند أبي يعلى	أبی یعلى أحمد الموصلي رحمة الله عليه	دار الكتب العلمية بيروت
١١	المعجم الكبير	سلیمان بن أحمد الطبراني رحمة الله عليه	المکتبة الفیصلیة، بيروت
١٢	المعجم الأوسط	سلیمان بن أحمد الطبراني رحمة الله عليه	دار الكتب العلمية بيروت
١٣	المسندruk	محمد بن عبد الله الحاکم عليه الرحمة	دار المعرفة، بيروت
١٤	كتن العمال	علاء الدین المتقی عليه الرحمة	دار الكتب العلمية بيروت
١٥	الترغیب والتھیب	الإمام زکی الدین بن عبد الله المتندری	دار الكتب العلمية بيروت

نمبر شمار	كتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعة
١٦	الفردوس بمنثور الخطاب	شيرورة بن شهردار الديلمي عليه الرحمة	دار الكتب العلمية بيروت
١٧	معجم الزاوئد	على بن أبي بكر الهيشني عليه الرحمة	دار الفكر، بيروت
١٨	شعب الإيمان	أحمد بن حسين بن علي البيهقي عليه الرحمة	دار الكتب العلمية بيروت
١٩	مرقة المفاتيح	علي بن سلطان (ملا علي قاري)	دار الفكر، بيروت
٢٠	العلل المتناهية	علامة عبد الرحمن بن علي الجوزي	دار الكتب العلمية بيروت
٢١	المواهب اللدنية	علامة شهاب الدين احمد قسطلاني	دار الكتب العلمية بيروت
٢٢	شرح الزرقاني على رحمة الله تعالى عليه	علامة محمد بن عبد الباقى الزرقانى	دار الكتب العلمية ، بيروت
٢٣	تاريخ بغداد	أبو يكر أحمد بن علي الخطيب البغدادي	دار الكتب العلمية بيروت
٢٤	رسائل عطارات (حصة اول)	امير المسنون محمد الياس عطار قادری دامت بر كاظم العالية	مكتبة المدينة ، کراچی

नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुमे 'रात बा'द नमाजे इश्या आप के यहां होने वाले द्य 'बते इस्तामी के हफ्तावार सुन्तों भरे इन्तिमाम् में रियाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी नियतों के साथ सारी रात शिर्कित पूरमाइये ॥३॥ सुन्तों की तरवियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिक़ने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफर और ॥४॥ रोज़ाना "फिक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्ड्रामात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीखु अपने यहां के जिम्मेदार को जम्म करवाने का मा'मल बना लीजिये ।

मेरा मदनी मक्सद : “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। ﷺ” अपनी इस्लाह के लिये “मदनी इनआमात” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी काफिलों” में सफर करना है।



MRP



01013119



- Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
• Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
• 421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
• 011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025
• feedbackmnmhind@gmail.com                            <img alt="Delete icon" data-bbox